असम डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय के 12वें दीक्षांत समारोह में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का भाषण

दिनांक 23 सितंबर 2023, शनिवार	समय : 5:00 PM	स्थान : तपेशिया, गुवाहाटी

- असम डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय के सम्मानित कुलाधिपति फादर जानुआरियस संगमा जी,
- कुलपति फादर (डॉ) जोस पेलेली
- प्रो. वाइस चांसलर फादर जोसेफ नेलानट
- रजिस्ट्रार फादर (डॉ.) जॉनी जोस
- प्रबंधन बोर्ड के सम्मानित सदस्यगण
- विश्वविद्यालय के सम्मानित सहकर्मी
- विशिष्ट अतिथिगण
- मीडिया के हमारे मित्र
- मेरे प्यारे विद्यार्थियों
- देवियों और सज्जनों

नमस्कार !

असम डॉन बॉस्को यूनिवर्सिटी के 12वें दीक्षांत समारोह में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं इस अवसर पर उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों और स्वर्ण पदक एवं पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूँ। मैं आपके माता-पिता और प्राध्यापकों को भी साधुवाद देता हूँ, जिनका आपकी उपलब्धियों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

डॉन बॉस्को विश्वविद्याल प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों में से एक है। यह संस्थान महांन संत डॉन बॉस्को के सिद्धांतों का अनुसरण कर विश्वभर में शिक्षा की ज्योत जला रही है। 132 देशों में डॉन बॉस्को के स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थान हैं। यह उच्च शिक्षण संस्थान डॉन बॉस्को के सेल्सियंस की एक परियोजना है, जो आजरा के डॉन बॉस्को सोसाइटी द्वारा संचालित है। सेल्सियंस को भारत में तकनीकी शिक्षा का दूसरा सबसे बड़ा एकल प्रदाता है। देश में 100 से भी अधिक सेल्सियंस तकनीकी स्कूल और 25 कॉलेज हैं।

संत डॉन बॉस्को की शिक्षा प्रणाली तीन स्तंभों तर्क, धर्म और कृपा पर आधारित है। यह प्रणाली शिष्य को एक मित्र बनाती है, जो अपने शिक्षक को परोपकारी के रूप में देखता है, जो उसे सलाह देता है, उसे अच्छा बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, उसे परेशानी, दंड और अपमान से बचाता है।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

आपके लिए गर्व की बात है कि आप एक बेहतरीन उच्च शिक्षण संस्थान के छात्र रहे हैं। आपने ऐसी बहुत-सी चीजें सीखीं होंगी, जो आपको भविष्य में आपके लक्ष्यों को हासिल करने में सहायक होगी।

आपने अपना अधिकांश जीवन शैक्षिक संस्थानों में बिताया है, जिसमें आपने एक छोटे बच्चे के रूप में अक्षरों को ज्ञान लिया, संख्याओं की गिनती करना सीखा और फिर युवा के रूप में मशीनों को जोड़ने या प्रभावशाली शोध करने के योग्य बने।

आशा है कि डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय में आपकी यात्रा बहुत अच्छी रही होगी। अब आप डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय से स्नातक हो रहे हैं और जीवन में एक नई यात्रा शुरू करने जा रहे हैं। इस नई यात्रा के लिए आप को मेरी शुभकामनाएं हैं। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, आपको एहसास होगा कि जीवन में लक्ष्य बदलता रहता है।

याद रखें, आपकी यह नई यात्रा काफी संघर्षमय होगी और आपको आगे बढ़ने के लिए कई मील आगे जाना है। लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत और विश्वविद्यालय से मिले ज्ञान से बाधाओं को पार करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

आपके स्नातक का वर्ष काफी यादगार है, क्योंकि इसी वर्ष हमारे अंतरिक्ष यान “चंद्रयान-3” ने चंद्रमा के ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम दक्षिणी ध्रुव पर उतरा और भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया।

“चंद्रयान-3” के साथ गया हमारा “विक्रम लैंडर” और “प्रज्ञान रोवर” आज भी चांद पर शान से पैर जमाए हुए है। यह हमारे वैज्ञानिकों की कुशलता और सकारात्मक सोच से ही संभव हो पाया है। इस तरह की उपलब्धि नवीन सोच और टीम वर्क के माध्यम से ही हासिल की जा सकती है। यह इस बात का प्रमाण है कि हम भारतीय नई सोच और संकल्प के साथ किसी भी क्षेत्र में विश्व का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखते हैं।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

पढ़ाई और डिग्रियां केवल नौकरी के उद्देश्य तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह लोगों में सामाजिक जिम्मेदारी, राष्ट्र और मानवता की सेवा की प्रवृत्ति को पोषित करने वाली होनी चाहिए। यह देश की एकता और अखंडता के सन्देश के प्रसार का माध्यम होनी चाहिए।

आप हमारे देश के नए और युवा कार्यबल हैं। आप बेहतर भारत के सपनों, दृष्टिकोण, नवीन विचारों और आशाओं के साथ उन लाखों युवाओं के साथ जुड़ने जा रहे हैं, जो देश की प्रगति में अपना योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप भी विश्वविद्यालय से अर्जित शिक्षा, और ज्ञान का सदुपयोग करके अपनी कुशलता, अनुशासन, नवीन विचारों और समर्पण के साथ देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए काम करेंगे।

मित्रों,

आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और उम्मीद है कि अगले दशक के भीतर यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। हमारा देश न केवल आर्थिक ताकत में, बल्कि विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रहा है। भारत विश्व राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका प्रमाण हाल ही में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन में हमने देखा।

संयुक्त राष्ट्र के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार 142.86 करोड़ लोगों के साथ भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है। इसमें से 68% 15-64 आयु वर्ग के हैं, जिसका अर्थ है कि हमारे पास दुनिया में सबसे बड़ा कार्यबल भी है। एक बड़े परिवार का मतलब केवल खिलाने के लिए अधिक लोग नहीं हैं, इसका मतलब काम करने के लिए अधिक हाथ हैं। इसका अर्थ यह भी हुआ कि हमारे पास प्रतिभा पैदा करने की अधिक संभावना है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस तरह इस युवा कार्यबल का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए हमें युवाओं की प्रतिभाओं को निखारना होगा, उन्हें मानसिक और तकनीकी रूप से कुशल बनने के लिए प्रोत्साहित करना होगा और उनके लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना होगा।

तकनीकी विकास से प्रभावित शिक्षा के क्षेत्र में परिदृश्य तेजी से बदले हैं। भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण की प्रक्रियाओं में कई क्रांतिकारी बदलाव हुए हैं। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की बराबरी करने के लिए हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षण पद्धतियों में नए और अभिनव रुझानों को अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र की बेहतरी के लिए हो रहे नए बदलाओं के लिए तैयार रहना होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अपनाया और लागू किया है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने कार्यशालाएं भी आयोजित की हैं और शिक्षकों को प्रशिक्षित भी किया है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अनुसंधान पर अधिक जोर दिया है, तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा दिया है, अन्य विषयों को सीखने की संभावना खोलने, प्रमाण पत्र, डिप्लोमा और डिग्री प्रदान करने में लचीलापन प्रदान की है और स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार किये जा रहे हैं।

जब मैं डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय परिसर के चारों ओर देखता हूं, तो प्राकृतिक सुंदरता और प्रकृति के अनुकूल बुनियादी ढांचे से परे एक चीज जो मुझे प्रभावित करती है, वह है स्वच्छता। शिक्षण संस्थानों में अनुशासन के अंतर्गत विद्यार्थियों को स्वच्छता की भी सीख दी जाती है। मुझे यकीन है कि इसी सीख के कारण यह इतना बड़ा परिसर साफ-सुथरा है। इस संस्कृति का आप विश्वविद्यालय परिसर के बाहर भी पालन करें। अपने सड़कों और शहर को साफ-सुथरा रखें। हर व्यक्ति अगर इस संस्कृति का पालन करे तो केवल असम ही नहीं, हमारा भारत भी स्वच्छ और प्रकृति के अनुकूल देश बन जाएगा।

हमें बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ हमारे शारीरिक और मानसिक विचारों की शुद्धी की भी आवश्यकता होती है। हमें अपने विचारों को साफ रखना चाहिये तथा किसी के लिए मन में द्वेश नहीं रखना चाहिये। जब कोई व्यक्ति बाहरी और आंतरिक सब तरीकों से स्वच्छ होगा, तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि हर कोइ एक दूसरे का भला चाहेगा।

एक बार फिर मैं आपको बधाई देता हूं और जीवन में सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद ! जय हिन्द !